मुसद्दीलाल
घिघियाते उपकुलपति
एक शब्द कही नही कि वह लड़का कौन था
क्या उसके वहने थी
क्या उसने रक्खे थे टीन के बक्मे मे अपने अजूबे
वह कौन कौन से पकवान
खाता था
एक शब्द कही नही एक वह शब्द जो वह खोज
रहा था जव वह मारा गया।

सन्नाटा छा गया
चिट्ठी लिखते लिखते छुटकी ने पूछा
'क्या दो वार लिख सकते हैं कि याद
आती है ?'
'एक वार मामी की एक वार मामा की ?'
'नहीं, दोनो वार मामी की'
'लिख सकती हो जरूर वेटी,' मैंने कहा
समय आ गया है
दस वरस वाद फिर पदारूढ होते ही
नेतराम, पदमुक्त होते ही न्यायाधीश
कहता है। समय आ गया है—
मोटा अच्छा देखकर प्रधानमन्त्री
पिटा हुआ दलपति अखबारो से
सुन्दर नौजवानो से कहता है गाता बजाता
हारा हुआ देश।
समय जो गया है
मेरे तलुवे मे छनकर पाताल मे
वह जानता हूँ मैं।

मूर्ख मूर्ख मेरी ओर

कल भी कहा था
आज दोहराता हूँ
पा लिया मैंने वह क्षण जिसमें
मनुष्य से बिना कारण प्यार
या नफरत करते हुए पाता हूँ
अपने को और बचा रखता हूँ
सपने को

मूर्ख मूर्ख सब हो गये मेरी ओर
छोड़कर तायरना
लिख दिया गया स्कूलों में सुभाषित
'मरता क्या न करना

एक आँसू पिया मैंने
एक चीकट बिस्तरे पर एक गीला बेखबर तन लिया मैंने
बचा सपने को
अँधेरा—आखिरी तुक
यही होगी—
—जिया मैंने ।

हरी गहरी रात

जहा बच्चे
सो रहे थे
आंगन मे
रात मे

एक रात म खड़ा था अँधेरा असहाय

वहाँ मैं गया दूर जैसे बहुत काई जाय

झुककर देखता हूँ
एक के मुँह पर हँसी थी
ऐसा क्या ही, आज उसने खोल दी
शाम से चुप हरी गहरी रात आखिर वक्त पा
उसके पिता से बोल दी ।

प्रार्थनाघर

सादी दीवार म
लक्डी का द्वार
सिर झुकाये व द
लिख दिया उस पर पुरोहित ने सुलख
कृपा करके यहा विज्ञापन न चिपकाय
यह हमारा प्राथनाघर है।

एक लडकी

तेरी कोहनिया ने हँसकर
मुझे कनखियो से देखा
तू उठी किस आजिजी से
बेखबर हुई तू कैसे

तेरी उँगलिया से छलका
डूबा हुआ उजाला
तेरी वे निराश बाहें
तेरे वे उदास कंधे
तू सहम गयी है भय से
कि तू शान्त है हृदय से ।

नया शब्द

आज एक अतुकान्त जिज्ञासा
जो काव्य को नही मानती
शान्त जो करती है कौतूहल
विचित्र को जैसे नही पहचानती
जानती है सब कुछ एक ही बार मे रहस्य
फिर भी जानबूझकर नही जानती
वह आज शब्द नही रही ।

कोई और कोई और कोई और—और अब भाषा नही

शब्द, अब भी चाहता हूँ
पर वह कि जो जाये वहाँ वहा होता हुआ
तुम तक पहुँचे
चीजो के आरपार दो अर्थ मिलाकर सिर्फ एक
स्वच्छन्द अर्थ दे
मुझे दे । देता रहा है जैसे छन्द केवल छन्द
घुमड घुमडकर भाषा का भास देता हुआ
मुझको उठाकर नि शब्द दे देता हुआ ।

लाखो का दर्द

रूखूखा आदमी दुनिया मे रहता है
मेरे उम दद से अनजान जो कि हर वक्त
मुझे रहता है हिन्दी मे दद की सकडा
कविताओ के बावजूद

और लाखा आदमियो का जो दद मैं जानता हूँ
उससे अनजान
रूखूखा आदमी दुनिया मे रहे जाता है।

टोपीवाला वाजा

इस विराट नगरी मे वडे-वडे धोखे है
गुर्राते हुए वाजो मे और कुलवुलाते हुए मसौदो मे
और छोट छोटे धोखे फूलदानो म है
न छोटे न वडे सौदो मे नौकरियो के

थोडी सी देर को लगता है सही
टोपियो का रखरखाव
जव तक कमरे मे कोई वोले नही

जैसे ही मैंने कहा देश मेरा भी है यह
वाजा वेताल हो गया मैं अकेला
टोपियाँ समेटकर ले गये दीनानाथ
रह गये फूल्दान और कुछ मसौदे
और अभी तक तो है मेरी नौकरी।

लोकतन्त्रीय मृत्यु

दिल्ली के वसन्त का वह एक विशेष दिन था
गरमी थी और हवा थी जो धूल को उड़ाये लिए जाती है।
मौलसिरी के बड़े से पेड़ तले छाँह का छितरा हुआ घेरा था
सामने लहराते एक हजार फूलों के रंग से डरकर
सिमटे हुए लोग उसमें बैठे थे
मृत्यु की खबर की प्रतीक्षा में।

एक झीना सा परदा था दोनों के बीच
लोगों के और मौसम के
मैंने उसे हटा दिया
कालातीत समय चारों ओर से घिर आया
न जीवन था उसमें न मृत्यु थी
सिर्फ बेहिसाब असंगतियों की एक धड़कती सत्ता
आसमान फूल की खुली आँखें
अन्दर से बाहर को देखने लगी
और धूल ने उठा रंगों को मनमानी जगह रोप दिया।

इस नयी सृष्टि में उठती गिरती है कोई चीज़, दूर

घर के भीतर एक थुलथुल राजनीतिक देह मे
जो भी गतिशील है अपनी ओर से जीने के लिए लडता है
अपराधी से आते है राज्यपाल मुख्यमन्त्री विधायक
बन्दी हुए मे जाते हैं
और एक बहुत बडे पिंजडे मे जोर से चीख मारता है एक मोटा सुग्गा
जैसे उसी मे राजा की जान हो

राजा मरेगा बजेगा इतिहास मे नगाडा
पर यहा कुछ भी सुनायी न देगा मैदान मे
सचिव जी देंगे जब लिखकर के सूचना
कहेंगे कि तोता गुजर गया हमारी जान मे ।

शहर से बाहर

एक दिन यो हुआ कि मैं शहर से दूर गया
और वहा आसमान मुझको दिखा
बररी हुई दरकी हुई धरती पे झुका
अपने आप और अपने मन से, बेकार ।

मेरी वह खास खास खास नफरत
जो लोगो के लिए मुझमे है, थी ।
जैसे एक उजाला उजाड सा शीतल
और उसमे एक हरा अँखुआ
और उस पर आकाश के रगो की झलक
जसे कोई एक आँख से हँसे एक से रोये
वह मेरी नफरत थी वहाँ और मैं अकेला था और शाम थी
न कोई कोशिश थी न कोई काम था न कोई दद

क्या था वह अपन को खोले हुए आकाश मे
जैसे एक पवित्र भय ।

क्या था वह एक अकेले मे वहाँ एक निराला पहाड सा
दिल मे
सागरो की पछाड सा दिल मे
आँधियो की दहाड सा दूर से लाकर कुछ मुझमे
डुबा जाता हुआ मूर्खो के बावजूद
उस क्षण मैंने देखा कि मैं मर सकता हूँ
ठीक उतने ही सहज जितने से और कुछ कर सकता हूँ
बिल्कुल अपनी तरह और बेकार।

मैदान में

अँधेरा यहा
अँधेरा नही है
एक खास तरह का चादना है
और न तू गोरी है
तू
एक
रुनाई है डबडबायी हुई
काले
सिफ तेरे केश हैं

सूने मदान मे हम नही हैं
सिफ एक दिशा है
और गति है
और जिसमे ठिठके खडे थे हम वह क्षण था

इसके बाद रोशनियाँ शहर की दिखायी देंगी।

रचता वृक्ष

देखो वृक्ष को देखो वह कुछ कर रहा है
किताबी होगा कवि जो कहेगा कि हाय पत्ता झर रहा है

रूखे मुँह से रचता है वृक्ष जब वह सूखे पत्ते गिराता है
ऐसे कि ठीक जगह जाकर गिरें धूप में छाँह में

ठीक ठीक जानता है वह उस अल्पना का रूप
चलती सडक के किनारे जिसे आँकेगा
और जो परिवर्तन उसमें हवा करे
उससे उदासीन है।

चढती स्त्री

वच्चा गोद मे लिये
चल्ती वस मे
चढती स्त्री

और मुझ मे कुछ दूर तक घिसटना जाना हुआ ।

खड़ी स्त्री

वह खड़ी थी
दुबली और थकी
और मुझे लगा कि वह खड़ी ही रहेगी
क्योंकि ऐसे ही वह पूर्ण होती है

तभी
वह
बोली—
नहीं
हँसी
नहीं
उसने देखा
और मैंने देखा कि वह अब सम्पूर्ण हुई।

खिंचा गुलाब

प्रार्थना में नमित रहकर
जरूरत भर
जब
सिर उठाया
तब
सुबह हो गयी

डाल पर ठहरा हुआ है खिंचा फूल गुलाब का ।

पत्तो का धुआँ

धूप मे सीधी सडक के किनारे
थमा हुआ झरतो पत्तियो वाला बडा वृक्ष

नीचे
सूखे पत्तो के ढेर से उठता धुआँ

हवा ने उसे हा-ना कर बखेर दिया।

तेरे कन्धे

एक रग होता है नीला
और एक वह जो तेरी देह पर नीला होता है

इसी तरह लाल भी लाल नही है
बल्कि एक शरीर के रग पर एक रग

दरअसल कोई रग कोई रग नही है
सिर्फ तेरे कधो की रोशनी है
और कोई एक रग जो तरी बाँह पर पडा हुआ है ।

अभी तक खडी स्त्री

ग्रीष्म फिर आ गया
फिर हरे पत्तो के बीच
खडी है वह
ओठ नम
और भरा-भरा सा चेहरा लिये
बदली की रोशनी-सी नीचे को देखती

निरखता रह
उसे कवि
न कह
न हँस
न रो
कि वह
अपनी व्यथा इस बार भी नही जानती ।

भीड में मैकू और मै

जव समाजवादी दल खोज रहा था लडके
मन्त्री वनने के लिए अगली सरकार मे
मैं खोज रहा था भीड मे रामलाल
वही मिल जाय अगर मैकू न मिले तो

मरते मनुष्या के मध्य खडा मक्कार मन्त्री
कहता है सविश्वास
सरकार सिचाई करे
सुनते हैं लडके, अधेड पढते हैं, याद करते हैं बूढे
यह विचार, अखवार सीने पर धर जाता है लोहे के
अक्षरो मे एक धौंस, कोई छटपटाता नही।

चार बुद्धिजीवी घास पर वैठे हुई क्रान्तिवार्ता
हर कोई अपने को विद्रोह न करने के लिए फटकारता
अन्त मे बचा एक ठस वायक्ता—पार्टी की शक्ति—
घर छोड आया अपढ वच्चा को शहर मे विचरता
विचारता किसी दिन एक प्रबल उथल पुथल
बदल दगी रस्बे की चेतना

अभी तक खडी स्त्री

ग्रीष्म फिर आ गया
फिर हरे पत्तो के बीच
खडी है वह
ओठ नम
और भरा-भरा सा चेहरा लिये
बदली की रोशनी सी नीचे को देखती

निरखता रह
उसे कवि
न कह
न हँस
न रो
कि वह
अपनी व्यथा इस वय भी नही जानती ।

भीड़ में मैकू और मैं

जब समाजवादी दल खोज रहा था लड़के
मन्त्री बनने के लिए अगली सरकार में
मैं खोज रहा था भीड़ में रामलाल
वही मिल जाय अगर मैकू न मिले तो

मरते मनुष्यों के मध्य खड़ा मक्कार मन्त्री
कहता है सविश्वास
सरकार सिंचाई करे
सुनते हैं लड़के, अधेड़ पटते हैं, याद करते हैं बूढ़े
यह विचार, अखबार सीने पर धर जाता है लोहे के
अक्षरों में एक घोंस, कोई छटपटाता नहीं।

चार बुद्धिजीवी घास पर बैठे हुई क्रान्तिवार्ता
हर कोई अपने को विद्रोह न करने के लिए फटकारता
अन्त में बचा एक ठस कार्यकर्ता—पार्टी की शक्ति—
घर छोड़ आया अपढ़ बच्चों को शहर में विचरता
विचारता किसी दिन एक प्रबल उथल-पुथल
बदल देगी वस्त्र की चेतना

वडे कष्ट से मैं पिछले कुछ वरसो मे
अपने को खीचकर लाया था दपण तक
उसमे जब देखा, देखी एक भीड
मेरी तरह पटिया चिक्नाये हुए

भीड मे मैल का अपना रग
भीड मे एक मैलखोरा रग
कुम्हलाये चेहरे, राष्ट्रीयता, व्यक्तिगत हाजमे
ठुड्डियाँ
खून का दौरा, निजी वाल
निजी बगल, शहर मे
इन्सान एक ठोस व्यक्ति है और खोखला शब्द
गाव मे एक खोखला पिंजर और एक खोखला शब्द

रोज-रोज थोडा थोडा मरते हुए लोगो का युण्ड
तिल-तिल खिसकता है शहर की तरफ
फरमाइशी सम्भोग मे सुनो एक उखडी सास की
साय साय, इस महान देश मे क्या करे, कहा जायें
घबराते लडके गदराती औरत लेकर।

गन्ध भीड से नही स्त्री की पीठ से आती है
रँगी चुँगी पजाबिन धुली पुँछी बगालिन रूखी मराठिन के
सर से मरे इन्तजार की गन्ध, भीड मे इन्तजार
जेठ की धूप मे एक दूसरे से सटी खुश औरतो की प्यार भरी
लम्बी कतार।

कितनी दूर कितनी दूर राजधानी से अकाल
मक्खन लो रोटी लो
चलो वहाँ हो आयें
संस्कृति की गुदगुदी, करुणा की झुरझुरी वहम की भुखमरी
ले आएँ, वहस वहम-तहस-नहस दूब हल्दी अच्छत
देख आयें देवी-देवता का ठाँव पानी बिना सूना
मक्खन लो रोटी लो
चलो वहा हो आयें
देख आयें दिग्विजयनारायणसिंह ने
क्या किया भोलारामदास का
अलग-अलग पानी पकानी इस जाति ने
क्या किया जात पूछने के बाद प्यास का

भीड म मैम्बारी गन्ध मिली
भीड म आदिम मूगता की गन्ध मिली
भीड म
मुझे नही मिली मेरी गन्ध
जब मैंने साँस भर उसे सूघा

पंडित राजाराम के ठंडे कमरे में
भीड का हिसाब हो रहा था
वहाँ मैंने पंडितजी को
सूघा

गया वाजपेयीजी से पूछ आया देश का हाल

पर उढा नही सका एक नगी औरत को
कम्बल रेलगाडी मे बीस अजनबियो के सामने
बेचू बन्द निरहू, ढोडे मँगरे पाँचू गोबरे
पाँच भाई
बैठे थे
जाने कहा से न जाने कहाँ को जा रहे थे
डाँड भरने के लिए, तीन दिन तीन रात मैंने सफर किया
तीसरे दर्जे मे अन्त मे एक भिनभिनाते कस्बे मे पहुँचा
पिछडे रिश्तेदारो के यहा, ढोडे मँगरे हौरे रस्ते मे उतर गये।

अधिनायक

राष्ट्रगीत मे भला कौन वह
भारत-भाग्य-विधाता है
फटा सुथन्ना पहने जिसका
गुन हरचरना गाता है
मखमल टमटम वल्लम तुरही
पगडी छत्र चँवर के साथ
तोप छुडाकर ढोल बजाकर
जय जय कौन कराता है
पूरब पच्छिम से आते है
नगे बूचे नरककाल
सिंहासन पर बैठा, उनके
तमगे कौन लगाता है
कौन-कौन है वह जन-गण मन-
अधिनायक वह महाबली
डरा हुआ मन बेमन जिसका
बाजा रोज बजाता है।

अकेला

अकेला अकेला मकान
मेरी किताबे सिफ गणित की
परिहास मे लिखी
आसपास एक धुधला उजाला निराशा का

क्रोध, लकडी और कपडे से जोडे हुए है यह मकान
शोर गाने का फोडता बार बार दीवार मे रोशनदान के कान
दिल्ली के मत्री का भाषण निचोडकर
पिपियाता हुआ जो
फिल्म गीत
बम्बई ने लिक्खा

न कही । न । नही ही है शान्ति
सुविधा सब जगह है सब जगह
मिसकिया, ताडियाँ
सब जगह काली लम्बी गाडियाँ बीच के माग पर

कही-कही नही है भ्रान्ति, वही है सबसे कम काव्य ।

शराब के बाद का सवेरा

ाराब के बाद का मवेरा
न मालूम कहा होगी कुतरी हुई किताब की खुशिया
भूले हुए डर के याद आने पर न मालूम कहा होगी

रोज के वार बार आने की ठहरी हुई तस्वीर मे
एक खँडहर है ।
किमी ने हरी सारी सूखने को टाग दी है ।

एक लडकी कि जिसकी बाढ मारी गयी है
डर के मारे नही बताती है मुझको वह
अपना दुख

लाठी टेक माँगता है भीख बुड्ढा ठीक-ठीक
कितना दू मुझे बता नही सकता ।

बस यही तक रात का पी थी

एक मुट्ठी भर घिसी रंगीन छोटी पेंसिलें
एक नाटक का पुराना अकेले का टिकट
पाँच पैसे का कि जो सचमुच नहीं थे
ठण्डा सिक्का
कल
दे गयी थी
मां।

जन्म के कितने दिनों के बाद आयी थी
वह मेरी मरी हुई मां।
जो महान मकान बना है पड़ोस में
वह मुझ पर गिर पड़ेगा
फिर मेरी गर्मियों की छुट्टियाँ हो जायेंगी
मेरे अपने स्कूल के अन्दर से निकलकर
बचपन के आखिरी दिन
आयेंगे घर के कोने में
कहानियों की अलमारी की खुशबू
और ठण्डा चिकना फर्श
मम्बे के तले से एक हाथ छुड़ाकर
उसे टोता हूँ। ढ नहीं ट

सो गये, वह रह, सो रहे हैं सब बच्चे
जो मैंने पैदा किये
खत्म हो गया बहुत बड़े सुनसान में
एक इंसान का गुणगान, शराब का गिलास
गिलास गिलास मैंने कहा जाम नहीं

दिन निकला रामधुन नहीं रामसरन
चिड़ीदिल दिन भर मेरे यहाँ
बैठा रहा अपने मरे दिल के वक्मे पर

मैंने नहीं माँगी है यह गलीज शान्ति
पर वह आयी है ये दोनों हथेलियाँ
मेरी हैं मैंने पहचाना देखो कितनी
बड़ी उपलब्धि

बस यहीं तक रात को पी थी

दिन निकला फोड़कर
चित्रगुप्त-सभा के सचिव के दाँत
नाम कहाँ तक याद रखूँ
लोगों को उनकी तोंद से जानता हूँ
पहले मुझे वहीं मिली देवीदयाल वर्मा में
कितनी शान्तिभरी घुटनभरी
आदमी से आदमी के बचाव की ढाल ।

गाँव गाँव मे दिया जन जन को
विश्वास
नेकराम नेहरू ने
कि अन्याय आराम से होगा आमराय से होगा नही तो
कुछ नही होगा
गाँव का

उसी दिन, बुड्ढो की तरह नही मरा मेरा बाप
लडते लडते मरा
बिना दवा के नही बिना सिफारिश के
ट्रक से टकराकर
छिटककर गिरीश गिरा हलवाई समिति ने
जहा आज तक सडक पर पारपथ नही
खुलवाया—
वही ।

फूल-शूल

(एक सहकविता)

फूलो में वह बात नही है जो फूलो मे होती थी
भूलो मे वह बात नही है जो भूलो मे होती थी
शूलो मे वह बात नही है जो शूलो मे होती थी
लूलो में वह बात मगर है जो लूलो मे होती थी

(अन्तिम पंक्ति अशोक वाजपेयी ने दी)

सनीचर

(एक और सहकविता)

फिर मुझे मारकर सनीचर ने
रास्ते से लगा दिया सा है
आज दिन भर के बाद लगता है
काम दिनभर मे कुछ किया सा है
मुझको भी साथ उठा ले चलिए
देखिए मैंने कुछ पिया सा है
पहले गिन लू तभी बताऊँगा
आपसे मैंने क्या लिया सा है

(अन्तिम चार पंक्तियां सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने दी)

मेरा मींजा दिल

एक शोर मे अगली सीट पे था
दुनिया का सबसे मीठा गाना
एक हाथ मे मीजा दिल था मेरा
एक हाथ मे था दिन का खाना।

इस डर से कि बस रुक जायेगी
आवाज़ जहां मैं दे दूंगा
मैं सुनता था। कोई छू ले कही
मेरी पीठ नही—आना जाना लोगो का
हँसना गपयाना—सीने मे भरे साबूदाना
दाँतो की चमक सुघरी नाकें—वह रोज़-रोज़
इस रोज आज कल भी मुझ पर झुक जायेगी
सूखी लडकी। चेहरा चेहरे चेहरो के मुँह
गाढे गोरे पक्के गुप चुप। अनजाने बेमन मुस्काना
मोटे बुजदिल। धुप। शहरो के।
        तब मैं समथा
        वह अनिता थी
        अनिता ? वह सीधी सलोनरी अपनी अनिता थी
        रोज़ाना

जब तेज हुई बस
मैंने अंग्रेजी मे कहा
ला कावाना

कोई सुन न सका।
मेरी खुशहाली के दिन मे
मुझसे दो आने ले न सका। मैं हो न सका
मैं सो न सका मैं रो न सका मैं पो न सका
पो क्या, माने ?

भाषण

राम ने कहा था
राम ने कहा था
राम ने कहा था
श्रीराम ने कहा था कि मोहन एक अच्छा लड़का है
वह रोज सवेरे उठता है पैदल पढने जाता है विद्या से उसे बडा प्रेम है
वह किसी की बात को नही मानता
सोच-समझकर अपना काम करता है।

श्रीमती गीताने का आज रात को ठीक समय पर आवागमन हुआ
दिन के आने से अनेक कठिनाइयो का सामना करना पडता है
ससार मे किसी ने ठीक ही कहा है कि यदि दुनिया मे
द्रोही आदमी न हो
तो आज के युग मे कुछ हो सकता है
यदि किसी आदमी को घोटकर पिलाया जाये कि ले भाई
तू ठीक समय पर इसका उपयोग करना।

हमारी फक्टरी मे लोगा का आवागमन जारी रहने के कारण हमको
महान हानी रहती है

सरकारी अकादमी के अनुसार कुछ लोगों ने आज बताया कि भावी
जनता के कर्णधार को बताना होगा कि संसार का गोवा में दमन
कैसे किया जाये
जनता में आज का युग काव्य पर निर्भर है देश को बसाने के लिए
सारी दुनिया का भार देश पर हो सकता है प्रधान मन्त्री ने कहा है
कि भारत सरकार का मत बहस के समय पेश हो सकता है
सकता पड़ गया होनेवाली जनसभा में छोटेलाल ने आज कहा
कि प्रजासमाजवादी दल के नेताओं ने कहा
कि महाकवि कालिदास ने कहा कि कुटुम्ब के जनों को बताना चाहिए
कि लोक की रचना कब हुई
अपना भाषण अन्त में समाप्त करते हुए श्री त्यागी ने कहा बस भई बस।

सफल जीवन

बरसों के बाद जब फिर मिले
तो देखा कि वे सब काम से लगे थे
जो कभी बिना वजह कुछ करने को तैयार थे
लोग लोग मार तमाम लोग गवाते मुँह चुराते
मेरी पिछली कविताओं से निकलकर खड़े हो गये
और मुझ पर मुस्कराने लगे ।
सफल था उनका जीवन सबका एक लक्ष्य था
सबकी एक सी गंध सबमें एक-सा प्रतिवाद
भ्रष्टाचार से
एक-सा आत्माभिमान सबमें न कम न ज्यादा
सब खुश और समझदारी से दमदमाते हुए सबके
मुँह पर एक-सा तेल

न कहीं से हवा आये और यह पृष्ठ पलट जाये
कि मेरी कविता के महावरे की बहुत नकल हो चुकी
यह मैं चाहता था कि भीड में से एक रो दिया भैं से
एक आवाज आई कुएँ में से
खाना वह खा आया था अब तरस खा रहा था
याद था उसे गीत जो रफी गत बरस गा रहा था ।

ती औरत

हाँफता अन्धड अन्धा बाप गोद मे मुह खोले हाफता बच्चा
दिखलाकर उसने दोहत्थड दिमाग पर मारा दिल दहलाकर
तिलमिलाकर मैंने हाथ जेब मे डाला निकली अठन्नी
नही दी
वह बहुत थी

एक औरत, दो बच्चे, एक गोद एक पैदल
पता पूछती रहती है प्रधानमन्त्री का
दस वरस बेदखल हुए उसे हुए पाच अधपागल

अत्याचार समाचार बन वह गया इसान का अपमान छपा नही
दस बरस मुझे भी जड हो गये हुए
अब रह गया सिफ उस औरत का खब्त

मैंने जब खा लिया घर से चल एक बलक एक पुलिस कप्तान
एक उपसचिव एक दिनकर बुनकर लोहार कुम्हार पटहार
रामकुमार को मैंने अपना दिल उधार दिया

उसको गुजाया गरमाया कमकर के लिए
थककर कुदाली रखकर जब उसने मुझ पर नज़र डाली
उसकी खाली आँखो मे था तिरस्कार

हम सब जानते थे ग़रीब क्या चीज़ होती है
हम सब गरीबी को बिसरा चुके थे
हममे से एक ने कहा रोज़ कम खाना मेरे दो बच्चो को तोडता
मरोडता कुतरता है रोज़-रोज कुछ समझे ?
बुझते हुए धीरे-धीरे एक दिन हज़ार लोग रोज़
सहने के अन्तिम कगार पर खडे हो
भारतवर्ष मे फलाग पडते हैं
व्यक्ति-स्वातन्त्र्य के समुद्र मे कोई धमाका नही

तब गज़ब का सफेद कुरता पहने हुए
बोला उपप्रधानमन्त्री लेखक-सभा म
हममे से हरएक कपडो के नीचे तो नगा है
फिर मुस्कराया मशीन पर

झप से अतर्ज्योति मुखडे पर आयी
लेगराम दौडे
इतने म चली गयी ।

कोई एक और मतदाता

जब शाम हो जाती है तब खत्म होता है मेरा काम
जब काम खत्म होता है तब शाम खत्म होती है
रात तक दम तोड देता है परिवार
मेरा नहीं एक और मतदाता का ससार।

रोज कम खाते खाते ऊबकर
प्रेमी-प्रेमिका एक पत्र लिख दे गये सूचना विभाग का

दिन-रात सास लेता है ट्राजिस्टर लिये हुए खुशनसीब खुशीराम
फुरसत मे अन्याय सहते मे मस्त
स्मृतियाँ खँखोलता हकलाता बतलाता सवेरे
अखबार मे उसके लिए खास करके एक पृष्ठ पर दुम
हिलाता सम्पादक एक पर गुरगुराता है

एक दिन आखिरकार दुपहर मे छुरे से मारा गया खुशीराम
वह अशुभ दिन था, कोई राजनीति का मसला

देश मे उस वक्त पेश नही था। खुशीराम वन नही
सका कत्ल का मसला, बदचलनी का बना, उसने
जैसा किया वैसा भरा

इतना दुख मैं देख नही सकता।

कितना अच्छा था छायावादी
एक दुख लेकर वह एक गान देता था
कितना कुशल था प्रगतिवादी
हर दुख का कारण वह पहचान लेता था
कितना महान था गीतकार
जो दुख के मारे अपनी जान लेता था
कितना अकेला हूँ मैं इस समाज मे
जहाँ सदा मरता है एक और मतदाता।

स्वाधीन व्यक्ति

इस अँधेरे मे कभी-कभी
दीख जाती है किसी की कविता
चौंध मे दिखता है एक और कोई कवि
हम तीन कम-से-कम हैं, साथ हैं।

आज हम
बात कम काम ज्यादा करना चाहते हैं
इसी क्षण
मारना या मरना चाहते हैं
और एक बहुत बडी आकाक्षा से डरना चाहते हैं
जिलाधीशो से नही।

कुछ भी लिखने से पहले हँसता और निराश
होता हूँ मैं
कि जो मैं लिखूगा वैसा नही दिखूगा
दिखूगा या तो
रिरियाता हुआ
या गरजता हुआ

किसी को पुचकारता
किसी को बरजता हुआ
अपने मे अलग सिरजता हुआ कुछ अनाथ
मूल्यों को
नही मैं दिखूगा ।

खण्डन लोग चाहते हैं या कि मण्डन
या फिर केवल अनुवाद लिसलिसाता भक्ति से
स्वाधीन इस देश मे चौंकते हैं लोग
एक स्वाधीन व्यक्ति से

बहुत दिन हुए तब मैंने कहा था लिखूगा नही
किसी के आदेश से
आज भी कहता हूँ
किन्तु आज पहले से कुछ और अधिक बार
बिना कह रहता हूँ
क्योंकि आज भाषा ही मेरी एक मुश्किल नही रही

एक मेरी मुश्किल है जनता
जिससे मुझे नफरत है सच्ची और निस्सग
जिस पर कि मेरा क्रोध बार-बार न्योछावर होता है

हो सकता है कि कोई मेरी कविता आखिरी कविता हो जाये
मैं मुक्त हो जाऊँ

ढोंग के ढोल जो डुड बजाते हैं उस हाहाकार मे
यह मेरा अट्टहास ज्यादा देर तक गूंजे सो जाने के पहले
मेरे सो जाने के पहले ।
उलझन समाज की वैसी ही बनी रहे

हो सकता है कि लोग लोग मार तमाम लोग
जिनसे मुझे नफरत है मिल जायें, अहकारी
शासन को बदलने के बदले अपने को
बदलने लगे और मेरी कविता की नकलें
अकविता जायें । बनिया बनिया रहे
बाम्हन बाम्हन और कायथ कायथ रहे
पर जब कविता लिखे तो आधुनिक
हो जाये । खीसें बा दे जब कहो तब गा दे ।

हो सकता है कि उन कवियो मे मेरा सम्मान न हो
जिनके व्याख्यानो से सम्राज्ञी सहमत है
घूर पर फुदकते हुए सम्पादक गदगद हैं

हो सकता है
हो सकता है कि कल जब कि अँधेरे मे दिखे
मेरा कवि बन्धु मुझे
वह न मुझे पहचाने, मैं न उसे पहचानू ।
हो सकता है कि यही मेरा योगदान हो कि
भाषा का मेरा फल जो चाहे मेरी हथेली से खुशी से चुग ले ।
अन्याय तो भी खाता रहे मेरे प्यारे देश की देह ।

फिल्म के बाद चीख

इस तुगत के साथ जुड़ी हुई
है एक घटिया फ़िल्म की दास्ता
रंगीन फ़िल्म की

उस अंधेरे में
खड़े हुए बाहर निकलने से पहले बंद होते हुए
कमरे में
एक बार
भीड़ में
जान बूझ
कर चीख
ना होगा
ज़िंदा रहने के लिए

सोचकर बैठी हुई रह जाएँ
पीली कन्याएँ
सीली चाचिया के पास

टिकी रहे क्षण-भर को पेट पर
यौवन के एक महान क्षण की मरोड
फिर साँस छोडकर चले
जनता
सुथना सम्हालती

सारी जाति एक झूठ को पीकर
एक हो गयी फिल्म के बाद
एक शम को पीकर युद्ध के बाद
सारी जाति एक

इस हाथ को देखो
जिसमे हथियार नही
और अपनी घुटन को समझो, मत
घुटन को समझो अपनी
कि भाषा कोरे वादो से
वायदा से भ्रष्ट हो चुकी है सबकी

न सही यह कविता
यह मेरे हाथ की छटपटाहट सही
यह कि मैं घोर उजाले मे खोजता हूँ
आग
जब कि हर अभिव्यक्ति
व्यक्ति नही
अभिव्यक्ति
जली हुई लकडी है न कोयला न राख

क्रोध, नकली क्रोध, कातर क्रोध
तुमने किस औरत पर उतारा क्रोध
वह जो दिखलाती है पेट पीठ और फिर
भी किसी वस्तु का विज्ञापन नही है
मूर्ख, धर्मयुग मे अस्तुरा बेचती है वह
कुछ नही देती है निरतर मे बीस बरस के मेरे
अपमान का जवाब

हर साल एक और नौजवान घूसा
दिखाता है मेज़ पर पटकता है
बूढ़ो की बोली मे खोखले इरादे दोहराता है
हाँ हमसे हुई जो गलती सो हुई
कहकर एक बूढ़ा उठ
एक सपाट एक विराट एक खुर्राट समुदाय को
सिर नवाता है

हर पाँच साल बाद निर्वाचन
जड़ से बदल देता है साहित्य अकादमी
औरत वही रहती है वही जाति
या तो अश्लील पर हँसती है या तो सिद्धान्त पर

सेना का नाम सुन देशप्रेम के मारे
मेजें बजाते हैं
सभासद भद भद भद कोई नहीं हो सकती
राष्ट्र की
सगद एक मंदिर है जहाँ किसी को द्रोही कहा नही
जा सकता

दूधपिये मुहपोछे आ बैठे जीवनदानी गोद-
दानी सदस्य ताद सम्मुख धर
बोले कविता मे देशप्रेम लाना हरियाना प्रेम लाना
आइसक्रीम लाना है
भोला चेहरा बोला
आत्मा ने नक्ली जबडे वाला मुंह खोला
दस मन्त्री बेईमान और कोई अपराध सिद्ध नही
काल रोग का फल है अकाल अनावृष्टि का
यह भारत एक महागद्दा है प्रेम का
ओढने त्रिछान को, धारण कर
धोती महीन सदानन्द पसरा हुआ

दौडे जाते हैं डरे लदेफँदे भारतीय
रेलगाडी की तरफ
थकी हुई औरत के बडे दात
बाहर गिराते हैं उसकी बची खुची शक्ति
उसकी बच्ची अभी तीस साल तक
अधेड होने तक तीसरे दर्जे मे
मातृभूमि के सम्मान का सामान ढोती हुई
जगह ढूढती रहे
चश्मा लगाये हुए एक सिलाई मशीन
कन्धे उठाये हुए

वे भागे जाते हैं जैसे बमबारी के
बाद भागे जाते हो नगर निगम को
सडाँध लिये दिये दूसरे शहर को
अलग-अलग वश के बीच मे सूने
अण्डकोप बाघ ।

भोपू ने कहा
पाँच बजकर ग्यारह मिनट सत्रह डाउन नौ
नम्बर लेटफारम
सिर उठा देखा विज्ञापन मे फिल्म के लडकी
मोटाती हुई चढी प्राणनाथ के सिर उसे
कही नही जाना है।

पाँच दल आपस मे समझौता किये हुए
बडे बडे लटके हुए स्तन हिलाते हुए
जाँघ ठोक एक बहुत दूर देश की विदेश नीति पर
हौंकते ढोकते मुह नोचे लेते हैं
अपने मतदाता का

एक बार जान बूझकर चीखना होगा
जिन्दा रहने के लिए
दशकदीर्घा मे से
रगीन फिल्म की घटिया कहानी की
सस्ती शायरी के शेर
ससद सदस्यो मे सुन
चुको के बाद।

हमारी हिन्दी

[अपने पिता की स्मृति को मेरी यही एक रचना उन्हें पसन्द थी]

हमारी हिन्दी एक दुहाजू की नयी बीवी है
बहुत बोलनेवाली बहुत खानेवाली बहुत सोनेवाली

गहने गढाते जाओ
सर पर चढाते जाओ

वह मुटाती जाये
पसीने से गन्धाती जाये घर का माल मैके पहुँचाती जाये

पडोसिनो से जले
कचरा फेंकने को लेकर लडे

घर से तो खैर निकलने का सवाल ही नहीं उठता
औरतों को जो चाहिए घर ही में है
एक महाभारत है एक रामायण है तुलसीदास की भी राधेश्याम की भी
एक 'नागिन' की स्टोरी 'बमय गाने'

और एक खारी बावली मे छपा कोकशास्त्र

एक खूसट महरिन है परपच के लिए
एक अधेड खसम है जिसके प्राण अकच्छ किये जा सकें
एक गुचकुल्या-सा आँगन कई कमरे कुठरिया एक के अन्दर एक
बिस्तरा पर चीकट तकिये कुरसियो पर गँजे हुए उतारे कपडे
फश पर ढँनगते गिलास
खूटियो पर कुचैली चादरें जो कुएँ पर ले जाकर फीची जायेंगो

घर मे सब कुछ है जो औरतो को चाहिए
सीलन भी और अन्दर की कोठरी मे पाच सेर सोना भी
और सन्तान भी जिसका जिगर बढ गया है
जिसे वह मासिक पत्रिकाओ पर हगाया करती है
और जमीन भी जिस पर हिन्दी भवन बनेगा

कहनेवाले चाह कुछ कह
हमारी हिन्दी सुहागिन है सती है खुश है
उसकी साध यही है कि खसम से पहले मरे
और तो सब ठीक है पर पहले खसम उससे बचे
तब तो वह अपनी साध पूरी करे।

एक अधेड भारतीय आत्मा

एक दिन
चिडचिडे बच्चो को लिए दवाखाने मे खडे खडे
मुझे एकाएक लगा मैं अधेड हो गया
न गलाबन्द कोट
न दुपट्टा
न टोपी
मैं बडा हुआ हाहाहूहू करता हुआ

इन्हे टोहो
हड्डियाँ पसलियाँ
और पडोस के अमीर बच्चा का भय
उदास
ये नही हो पाते कुढन के मारे

प्रिय पाठक
ये मेरे बच्चे हैं
कोई प्रतीक नही
और इस कविता मे

मैं हूँ मैं
कोई रूपक नहीं

यह मैं खड़ा हूँ
भरापूरा एक आदमी
आठ दस सफेद बाल
आठ दस अधूरे स्वप्न
मक्कार बूढ़ों की परिषद में
एक खतरनाक बात
कहकर बैठ जाऊँगा

गाकर सुनाता है
जनवादी वादों की घोषणा
महामन्त्री
जनता के लिए नहीं
वह विरोधियों को प्रमाण दे रहा है
कि मैं दलबदल के लिए योग्य व्यक्ति हूँ

पुलकित उपराष्ट्रकवि
जनगणातट पर बैठे
घिसते थे चन्दन
किसको तिलकित करें
आज नहीं जानते
क्योंकि लोहिया के यहाँ आने जाने लगे हैं
दोनों
कल फिर होंगे राष्ट्रकवि, महामन्त्री

कल फिर मैं
एक बात मह् वैठ जाऊँगा

खुली हुई खिडकी से आती है
माँ की याद
वह वापस जाना नही
आगे जाना है
प्रेम के पारावार के पार
और अपने पिता के
अनेक मधुर अनुभवो के सग

खुला अव्यथित वायुमण्डल जो वाहर है
उस पर एक क्षण मुझे विश्वास
नही होता
किन्तु फिर होता है
वचपन के अन्धकार मे डर था
आज वह धुधला है स्निग्ध है

कितनी देर से आये हो तुम मेरे ममत्व
जो जानता हूँ अव
वह सव जानते ही थे
न जानना है मृत्यु फिर से जानना जीवन

दोहराने दो मुझको अपनी बच्चो पर बाप का दुलार
वह जो अगली शताब्दी मे विचित्र कोई मौत पाने को है

जो मुझसे नही मरा
शत्रु वह समाज मे मृत्यु के नये प्रकार
खोजता रहेगा । अत्याचार अगले कुछ वर्षो मे
और भी अनायास होगा
विद्रोह और काइया

फिर बीस साल बाद
एक सयोग से
मैं वह कहूँगा जो
बीस साल से सच था

वापस ले जाओ मुझे एक बार उस दिन
जब मैंने कहा था कि भाषा को
मन्दिर मे बन्द मत करो
उसे बोलो
मैंन कहा था कहा था कहा था हर बार जबकि बदल
नही पाया सरकार मैंने कहा था कि एक अगुल
और गल गया गोश्त

वापस ले जाओ मुझे

वह नरेश बरनवाल
कहाँ होगा आज जिस पीले से लडके से
मेरी होड रहती थी

बाँध मे दरार
पाखण्ड वक्तव्य मे
घटतौल न्याय मे
मिलावट दवाई मे
नीति मे टोटका
अहकार भाषण मे
आचरण मे खोट हर हफ्ते मैंने विरोध किया
सचमुच स्वाधीन हो जाने का इतना भय
एक दास जाति मे !
जो अधेड होते हैं
जी नही सकते है
बाकी दिन
आस मे
हर हफ्ते जय जय जय
सुनते रह नही सकते

हर सकट भारत मे एक गाय
होता है
ठीक समय ठीक बहस कर नही सकती है

राजनीति
वाद में जहाँ कहीं से भी शुरू करो
बीच सड़क पर गोबर कर देता है विचार
हाय हाय करते हुए हाँ-हाँ करते हुए ह-ह करते हुए
समुदाय
एक हजार लोग ध्यानमग्न सुनते हुए
एक अदद रिरियाता है सितार

जग रहो जाने किस वक्त सब एकमत हो जायें।

जिसको आगे चलकर राजकाज करना है
दाँत माँज रखता है मुस्काने के लिए
मुसकाकर प्राध्यापक-परिषद में मुझे आप मारो
गृहमन्त्री ने
कहते तुम ठीक हो चुप रहो
और मेरे साथ बेईमानी में शरीक हो

सघ रहे सघ रहे उसने कहा
भारत का। चाहे हर भारतीय हर भारतीय का
गुलाम रहे

बीस बरस बीत गये
लाल्सा मनुष्य की तिलतिल कर मिट गयी

अब नही हो सकता कोई लेखक महान
पहले तो बाम्हन होंगे फिर ठाकुर होंगे
फिर बारी आयेगी चमारो की
तब तक चमार कायथ न बन गये होंगे ।

टूटते टूटते
जिस जगह आकर विश्वास हो जायेगा कि
बीस साल
धोखा दिया गया
वहीं मुझे फिर कहा जायेगा विश्वास करने को
पूछेगा ससद मे भोलाभाला मन्त्री
मामला बताओ हम कारवाई करेंगे
हाय-हाय करता हुआ हाँ हाँ करता हुआ हे हे करता हुआ
दल का दल
पाप छिपा रखने के लिए एकजुट होगा
जितना बडा दल होगा उतना ही खायेगा देश को

सबसे बडे नेता के बूढे हो जाते ही
लग लेगा पीछे एक कम बूढा
जाने किस वक्त वह मर जाये जो ज्यादा बूढा है ।

• • •